## विचार बिन्दु

**हर चीज़ की कीमत व्यक्ति की जेब और ज़रूरत के अनुसार होती है और शायद उसी के अनुसार वह अच्छी या बुरी होती है। –संतोष गोयल**

# प्राणी जीवन की रक्षा हेतु प्रकृति की रक्षा आवश्यक

प्रकृति का संरक्षण हमारे सुनहरे भविष्य का आधार है। मनुष्य जन्म से ही प्रकृति और पर्यावरण के सम्पर्क में आ जाता है। प्राणी जीवन की रक्षा हेतु प्रकृति की रक्षा अति आवश्यक है। वर्तमान समय में विभिन्न प्रजाति के जीव जंतु, वनस्पतियां और पेड़-पौधे विलुप्त हो रहे हैं जो प्रकृति के संतुलन के लिए बहुत ही भयावह है। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समय समय पर प्रकृति का दोहन करता चला आ रहा है। अगर प्रकृति के साथ खिलवाड होता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हमें शुद्ध पानी, हवा, उपजाऊ भूमि, शुद्ध पर्यावरण वातावरण एवं शुद्ध वनस्पतियाँ नहीं मिल सकेंगी। इन सबके बिना हमारा जीवन जीना मुश्किल हो जायेगा। प्रकृति हमारे जीवन का आधार है। विभिन्न प्राकृतिक संसाधन जैसे कि जल, वन्यजीवन, वन, खेती, वायु आदि हमारी जरूरतों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमारी सांसें जल से भरी हुई हैं और हमारी खाद्य आपूर्ति भी खेती द्वारा उत्पन्न होती है। इसलिए, हमें प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने की जरूरत है ताकि हम समृद्धि और सुख-शांति के साथ जीवन जी सकें।

प्रकृति के संरक्षण का अर्थ है कि वनों, भूमि, जल निकायों का संरक्षण और खनिजों, ईंधन, प्राकृतिक गैसों आदि जैसे संसाधनों का संरक्षण, यह सुनिश्चित करने के लिए कि ये सभी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहें। ऐसे कई तरीके हैं जिनसे आम आदमी प्रकृति के संरक्षण में मदद कर सकता है। इनमें से कुछ ऐसे हैं जो आसानी से किए जा सकते हैं और एक बहुत बड़ा बदलाव ला सकते हैं। प्रकृति हमें पानी, भूमि, सूर्य का प्रकाश और पेड़-पौधे प्रदान करके हमारी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करती है। इन संसाधनों का उपयोग विभिन्न चीजों के निर्माण के लिए किया जा सकता है जो निश्चित ही मनुष्य के जीवन को अधिक सुविधाजनक और आरामदायक बनाते हैं। प्रकृति के संरक्षण से अभिप्राय जंगलों, भूमि, जल निकायों की सुरक्षा से है तथा प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण खनिजों, ईंधन, प्राकृतिक गैसों जैसे संसाधनों की सुरक्षा से है जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि ये सब प्रचुर मात्रा में मनुष्य के उपयोग के लिए उपलब्ध रहें।

ऐसे कई तरीके हैं जिससे आम आदमी प्रकृति के संरक्षण में मदद कर सकता है। यहां कुछ ऐसे ही तरीकों का विस्तृत वर्णन किया गया है जिससे मानव जीवन को बड़ा लाभ हो सकता है।

पृथ्वी के पास हर इंसान की जरूरत पूरी करने के लिए काफी कुछ है, लेकिन उसके लालच को पूरा करने के लिए नहीं हैं। पृथ्वी पर पानी, हवा, मिट्टी, खनिज, पेड़, जानवर, पौधे आदि हर किस्म की जरूरत के लिए संसाधन है। लेकिन औद्योगिक विकास की होड़ में हम पृथ्वी को सफाई और उसके ही स्वास्थ्य को नजरअंदाज करने लगे हैं। हम कुछ भी करने से पहले यह बिलकुल नहीं सोचते कि हमारी उस गतिविधि से प्रकृति को कितना नकुसान होगा। प्रकृति का संरक्षण प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से सबंधित है। इनमें मुख्यत: पानी, धूप, वातावरण, खनिज, भूमि, वनस्पति और जानवर शामिल हैं। प्रकृति हमें पानी, भूमि, सूर्य का प्रकाश और पेड़-पौधे प्रदान करके हमारी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करती है। इन संसाधनों का उपयोग विभिन्न चीजों के निर्माण के लिए किया जा सकता है जो निश्चित ही मनुष्य के जीवन को अधिक सुविधाजनक और आरामदायक बनाते हैं।

**प्रकृति से हमारा तात्पर्य जल, जंगल और जमीन से है। हम लगातार प्रकृति का दोहन करते जा रहे हैं जिससे मानव जीवन संकट में पड़ गया है। जल, जंगल और जमीन के बिना प्रकृति अधूरी है। जल को व्यर्थ में बहा रहे हैं जंगलों को काट रहे हैं और जमीन पर जहरीले कीटनाशक का उपयोग करके उसकी उर्वरक क्षमता और उपजाऊ शक्ति को कमजोर कर रहे हैं।**

प्रकृति से हमारा तात्पर्य जल, जंगल और जमीन से है। हम लगातार प्रकृति का दोहन करते जा रहे हैं जिससे मानव जीवन संकट में पड़ गया है। जल, जंगल और जमीन के बिना प्रकृति अधूरी है। जल को व्यर्थ में बहा रहे हैं जंगलों को काट रहे हैं और जमीन पर जहरीले कीटनाशक का उपयोग करके उसकी उर्वरक क्षमता और उपजाऊ शक्ति को कमजोर कर रहे हैं। हम एक अर्से से प्रकृति दिवस मना रहे हैं और लोगों को प्रकृति संरक्षण का संदेश दे रहे हैं। लेकिन इसके बावजूद प्रकृति पर मंडराता खतरा जस का तस बना हुआ है। सबसे बड़ा खतरा तो इसे ग्लोबल वार्मिंग से है। धरती के तापमान में लगातार बढ़ते स्तर को ग्लोबल वार्मिंग कहते है। वर्तमान में ये पूरे विश्व के समक्ष बड़ी समस्या के रुप में उभर रहा है। ऐसा माना जा रहा है कि धरती के वातावरण के गर्म होने का मुख्य कारण का ठीनहाउस गैसों के स्तर में वृद्धि है। इसे लगातार नजरअंदाज किया जा रहा है जिससे प्रकृति पर खतरा बढ़ता जा रहा है। ये आपदाएँ पृथ्वी पर ऐसे ही होती रहीं तो वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी से जीव-जन्तु व वनस्पति का अस्तिव ही समाप्त हो जाएगा। कहते है प्रकृति संरक्षित होगी तो मानव जीवन भी सुरक्षित होगा। प्रकृति हमारी धरोहर है, इसकी रक्षा करना हमारा कत्तर्व्य है। प्रकृति ने हमें जीव जंतुओं सहित सूर्य, चाँद, हवा, जल, धरती, नदियां, पहाड़, हरे-भरे वन और खनिज सम्पदा धरोहर के रूप में दी हैं। मनुष्य अपने निहित स्वार्थ के कारण प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग कर रहा है। बढ़ती आबादी की समस्या के लिए आवास समस्या को हल करने के लिए हरे-भरे जंगलों को काट कर ऊंची-ऊंची इमारतें बनाई जा रही हैं। वृक्षों के कटने से वातावरण का संतुलन बिगड़ गया है और ग्लोबल वार्मिंग की समस्या पूरे विश्व के सामने भयंकर रूप से खड़ी है। खनिज-सम्पदा का अंधाधुंध प्रयोग किया जा रहा है। जीव-जंतुओं का संहार किया जा रहा है, जिसके कारण अनेक दुर्लभ प्रजातियां लुप्त होती जा रही हैं।

हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम पृथ्वी और उसके वातावरण को बचाने का प्रयास करेंगे। हम पर्यावरण के प्रति न सिर्फ जागरूक हो बल्कि उसके लिए कुछ करें भी। प्रकृति को संकट से बचाने के लिए स्वयं अपनी ओर से हमें शुरूआत करनी चाहिए। पानी को नष्ट होने से बचाना चाहिए। वृक्षारोपण को बढ़ावा देना चाहिए। अपने परिवेश को साफ-स्वच्छ रखना चाहिए। प्रकृति के सभी तत्वों को संरक्षण देने का संकल्प लेना चाहिए।

**–अतिथि संपादक,**
**बाल मुकुन्द ओझा**
**वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार**

# सागर और मनुष्य के रिश्ते को जागृत करने का समय आ गया है

**डॉ. रामावतार शर्मा**

डॉक्टर किलापर्ती रामकृष्णा उम्मीद और नाउम्मीदी के बीच झूलते रहते हैं क्योंकि वे एक भावुक पर्यावरण विद्वान हैं और समुद्रों से बहुत प्यार करते हैं। अमेरिका की वुड्स होल ओसेनोग्राफिक इंस्टीट्यूट में पर्यावरण और समुद्री मामलों के वरिष्ठ सलाहकार डॉक्टर रामकृष्णा के अनुसार दुनिया के कई देशों ने हाल ही में नीली अर्थव्यवस्था को लेकर कुछ योजनाएं घोषित की हैं जिनसे समुद्र के इकोसिस्टम को बचाते हुए सागर के संसाधनों का मानव हित में उपयोग होगा।

इस तरह की योजनाओं के तहत समुद्री जहाज निर्माताओं को कम कार्बन विसर्जित करने वाले जहाज बनाने के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया जाएगा, सागर के तटीय पेड़ और झाड़ियां जिन्हे मैनठोव कहा जाता है उनको सुरक्षित और विकसित किया जाएगा। साथ में सागर में समाहित होने वाली नदियों के डेल्टा को भी बचा कर रखा जायेगा। सागर में प्लास्टिक और अन्य प्रदूषण को सख्ती से नियंत्रित करने के प्रयासों को आगे बढ़ाना होगा। इस योजना के तहत नॉर्वे और अमेरिका ने ठीन शिपिंग चैलेंज नाम से एक प्रोत्साहन योजना भी प्रारंभ की है। सिंगापुर भी इस दिशा में प्रयासरत हो रहा है। इन सब प्रयासों में डॉक्टर रामकृष्णा उम्मीद की किरण देख पाते हैं।

पर वे इस बात से निराश हैं कि इन सारी योजनाओं में समुद्र के अम्लीकरण पर कोई बड़ी बातचीत नहीं हो रही है। हमें ध्यान में रखना चाहिए कि पृथ्वी की सतह का 70 प्रतिशत हिस्सा समुद्र है। मनुष्य द्वारा पैदा की गई कार्बन डाइऑक्साइड के 30 प्रतिशत हिस्से को समुद्र एक विशाल स्पंज की तरह सोख लेता है जिसके कारण धरती के जीव सांस ले सकते हैं। उदाहरण के तौर पर 1992-2018 के बीच हमारे सागरों ने 6700 करोड़ टन कार्बन डाइऑक्साइड को अपने अंदर सोख कर हमारे वायुमंडल को शुद्ध किया है। परंतु तीव्र मानवीय विकास के कारण

मैनग्रोव, समुद्री घास, रीफ और निकटस्थ जंगल आदि का सफाया होने से सागर के पानी का पीएच कम होता जा रहा है जिसके फलस्वरूप हमारे समुद्र अम्लीय (एसिडिक) होते जा रहे हैं।

ऐसा होने से यहां पर ऑक्सीजन कम होती जा रही है। हमें भूलना नहीं चाहिए कि हमारे वातावरण की 25 प्रतिशत ऑक्सीजन भी समुद्रों से आती है। बढ़ते वैश्विक तापमान से समुद्री घास और कई जीव भी विलुप्ति की तरफ जा रहे हैं। यदि ऐसा होता है तो दुनिया के लाखों लोगों के लिए आजीविका का एकमात्र स्त्रोत नष्ट हो जायेगा।

मनुष्य की गतिविधियां प्रथम औद्योगिक क्रांति के समय के तापमान की तुलना में धरती के तापमान को 1.5 डिठी सेल्सियस से ज्यादा बढ़ाने के कगार पर हैं। ऐसा होने से इतनी अधिक कार्बन डाइऑक्साइड पैदा होगी जिसको समुद्र का पानी तेजी से अपने में समाहित नहीं कर पाएगा। सागर अम्लीय हो जायेंगे और वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ जाने से धरती का जीवन खतरे में आ जायेगा।

ऐसी स्थिति को बचाने के लिए प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉक्टर एमिली पिड्जन चेतावनी देती रहती हैं। उनके अनुसार ; यदि समुद्र का इकोसिस्टम दूषित या फिर नष्ट हो गया तो नीला कार्बन भंडार (समुद्र के पानी द्वारा बांधी गैस) कार्बन डाइऑक्साइड के रूप में वातावरण में फैल जायेगा जिसके कारण धरती के पर्यावरण में बड़े परिवर्तन आयेंगे।

नवंबर 2022 में सिंगापुर स्थित एजेंसी क्लाइमेट इंपैक्ट (सीआइएक्स) ने अपनी पहली कार्बन क्रेडिट नीलामी लगाई। इसमें पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित 350,000 हैक्टेयर मैनठोव को पुनर्स्थापित करना है। इस योजना को प्राइवेट सेक्टर के लिए भी खोला गया है। सीआईएक्स प्रमुख मिक्की लार्सन का कहना है कि ;सागर तट के प्राकृतिक स्वरूप को बचाना सिर्फ वातावरण परिवर्तन तक ही सीमित नहीं है बल्कि यहां पर रहने वाले लोगों की आजीविका और प्रकृति की जैविक विविधता की रक्षा भी बहुत महत्वपूर्ण है।; मैनग्रोव वन के विनाश के कारण समुद्र का पानी कभी भी निकट के कस्बों को निगल सकता है। स्थानीय लोगों के सहयोग और उनकी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के बिना कोई भी योजना सफल नहीं हो सकती।

लोगों के स्वास्थ्य, रोजगार और उनके बच्चों की शिक्षा के लिए विश्वस्तरीय प्रयास होने चाहिएं वरना मनुष्य नामक जीव अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए पर्यावरण को कितना ही नुकसान पहुंचा सकता है। विश्व के राजनीतिक नेतृत्व से पर्यावरणविदों को ज्यादा उम्मीद नहीं है। अधिकतर बड़े देशों के नेता अपना सारा समय चुनावों में लगाते नजर आ रहे हैं और छोटे देशों में अक्सर तख्तापलट चलता रहता है। ऐसे में व्यापक जनचेतना ही उम्मीद की किरण बन सकती है।

**–डॉ. रामावतार शर्मा,**
**( चिकित्सक एवं लेखक )**

# शुभम ने विश्व में भारत का गौरव बढ़ाया

**जयपुर।** हाल ही में द रिपब्लिक ऑफ बुल्गारिया की उप राष्ट्रपति, इलियाना योतोवा, द्वारा सोफ़िया बाल्कन पैलेस के रॉयल हॉल में शुभम मानव मिश्र को "वाइस प्रेसीडेन्टल हुमेनिटेरियन अचीवमैंट अवॉर्ड" देने के लिए आमंत्रित किया गया। शुभम को ये अवार्ड उनके अभिनय, फिल्म निर्माण एवं दृश्य कलात्मकता के माध्यम से मानवता के प्रति विशिष्ट सेवा एवं मानवीय कार्यों में असाधारण योगदान के लिए प्रमाण पत्र में बुल्गारिया देश के कोट ए आर्म एवं आधिकारिक मुहर के साथ दिया गया है। ग़ौरतलब है कि उनकी सभी फ़िल्में एवं आर्ट वर्क्स को अद्भुत बताकर सराहा गया है एवं यूरोपीय देशों में प्रदर्शित किया गया है। इसके साथ ही अमेरिका के न्यू यॉर्क शहर में आयोजित स्टूडेंट वर्ल्ड इम्पैक्ट फ़िल्म फ़ेस्टिवल में शुभम की फ़िल्म " ए मिटिंग विथ चाइल्डहुड" को 120 देशों से आयीं 13,868 फ़िल्मों में सर्वश्रेष्ठ मानते हुए सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म अवार्ड से सम्मानित किया गया। जुरीज़ ने कहा कि शुभम की फ़िल्म प्रेरणादायी एवं सम्वेदनात्मक है और इस फ़िल्म का डाईरेक्शन अद्भुत है।

यह फिल्म शिक्षा और इसके उद्देश्य को समझने की आवश्यकता पर केंद्रित है। फ़िल्म फ़ेस्टिवल स्टूडेंट्स एंड एजुकेशन की थीम पर बेस्ड था। इंटरनैशनल ओलम्पिक कमिटी, फ्रेंच नैशनल ओलम्पिक एंड स्पोर्ट्स कमिटी एवं द इंटरनैशनल फ़ेडरेशन ओफ़ स्पोर्ट्स सिनेमा द्वारा फ्रान्स के आल्प्स-मेरीटाइम्स में आयोजित

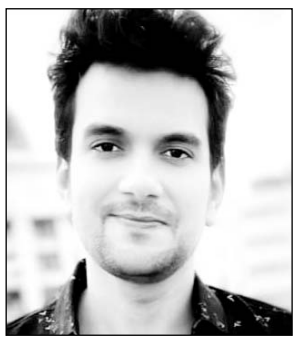

**शुभम मानव मिश्र**

स्पोर्ट्स फ़िल्म फ़ेस्टिवल-2023 में भी शुभम की फ़िल्म, "मैसी : दि गॉड ऑफ फुटबाल", जो कि फ़ुट्बॉल के महानतम खिलाड़ी लिओनल मैसी के जीवन पर आधारित है, को विश्व की दस श्रेष्ठ स्पोर्ट्स फ़िल्म में शामिल किया गया है। इस फ़िल्म को शुभम ने मैसी की मातृभाषा स्पैनिश में बनाया है। जुरीज़ ने फ़िल्म को सराहते हुए कहा है कि ये फ़िल्म जीवन में खेलों के महत्व को समझाती है और समाज में खेलों से जुड़े मूल्यों एवं उनकी संस्कृति के प्रसार में अमूल्य योगदान है। ओलम्पिक कमिटी द्वारा शुभम को पेरिस समर ओलम्पिक 2024 के लिए आधिकारिक रूप से आमंत्रित किया गया है।

शुभम को "सर्टिफिकेट ऑफ आफिसियल सलैक्सन" का अवॉर्ड भी दिया गया है एवं उनकी फ़िल्म ओलम्पिक खेलों के दौरान दिखाई जाएगी। उल्लेखनीय है कि शुभम पहले भारतीय अभिनेता एवं फ़िल्ममेकर हैं, जिन्हें ओलम्पिक कमिटी द्वारा उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए अवॉर्ड देकर सम्मानित किया है।

इसके अतिरिक्त पूर्व में शुभम को कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अवार्डस मिल चुके हैं। इसी साल जनवरी में उन्हें लकज़म्बर्ग से "सर्टिफिकेट ऑफ आर्टिस्ट मैरिट" उनके कला क्षेत्र में अद्भुत योगदान के लिए नौ भाषाओं में दिया गया है। उनकी फ़िल्म 'ए डे एट माई फेवरेट प्लेस" को स्वीडन के अलावा पुणे फ़िल्म फ़ेस्टिवल में भी बेस्ट फ़िल्म से पुरस्कृत किया गया है। शुभम की फ़िल्म कांस वर्ल्ड फ़िल्म फ़ेस्टिवल में सेमी फ़ाइनलिस्ट भी रही। केरल फ़िल्म फ़ेस्टिवल में भी उनकी फ़िल्म नेचर केन बी क्रुल को पिछले महीने प्रदर्शित किया गया है।

# नीमकाथाना से कोटपूतली के लिए रोडवेज बस नहीं होने से यात्री परेशान

**पाटन,** (निसं)। नीमकाथाना से कोटपूतली जाने के लिए सांय 4:30 बाद से कोई लोकल रोडवेज बस सेवा नहीं होने से बडिया मोड़, भराला, रायपुर मोड, गुसाई का मठ, डोकण, न्योराणा मोड, मेहरो की ढाणी, पाटन, राजपुरा, पातुवाला, बल्लुपुरा, नहर स्टैंड, छाजा की नांगल, हसामपुर आदि गांव के लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

डेली अप-डाउन करने वाले लोगों ने बताया कि नीमकाथाना बस स्टैंड पर सैकड़ों लोग बस की इंतजार में खड़े रहते हैं, परंतु लोकल रोडवेज बस नहीं होने से मजदूर लोगों को अपनी जान जोखिम में डालकर प्राइवेट वाहनों में ऊपर नीचे बैठ कर आना पड़ता है। इसको लेकर लोगों ने नीमकाथाना विधायक सुरेश मोदी को ज्ञापन दिया है।

- **शाम को बस नहीं होने से मजदूर लोगों को जान जोखिम में डालकर प्राइवेट वाहनों में ऊपर नीचे बैठकर आना पड़ता है**
- **समस्या को लेकर लोगों ने नीमकाथाना विधायक सुरेश मोदी को ज्ञापन दिया**

ज्ञापन के माध्यम से मांग की है कि नीमकाथाना से कोटपूतली के लिए साढ़े चार बजे से 7 बजे के बीच में लोकल रोडवेज बस शुरू करवा दी जाती है तो लोगों को किसी प्रकार की समस्या नहीं होगी तथा मजदूरी करने वाले लोग समय पर अपने घर पर पहुंच सकते हैं। पहले यह सेवा सुचारू रूप से शुरू थी परंतु अब इस सेवा को बंद कर दिया गया है।

जिसके चलते यात्रियों को साधन के अभाव में काफी समय के लिए खड़ा रहना पड़ता है। ज्ञापन देने वालों में ओम प्रकाश सैनी, मुरारी सैनी ,मुकेश यादव, प्रकाश, अंकुश, मनोज सैनी, सुभाष जांगिड़, राजेंद्र, मोहम्मद नफीस, सुरेंद्र, सुभाष सिंह, चिराग आदि शामिल रहे।

# ओवरलोड वाहनों के खिलाफ कार्रवाई की मांग

**पाटन,** (निसं)। स्टेट हाईवे 37 सी पाटन-डाबला-गांवली हाईवे सड़क पर इन दिनों चेजा पत्थर, क्रेशर गिट्टी, सिलिका सैंड से भरे हुए ओवरलोड वाहन चल रहे हैं जिससे आए दिन दुर्घटनाओं का अंदेशा बना रहता है। इन ओवरलोड वाहनों से सड़कों पर रोड़ी, पत्थर गिरते रहते हैं जिससे आमजन भय के साए में जीने को मजबूर है।

दूसरी ओर ओवरलोड वाहन बहुत तेज गति से चलते हैं तथा आए दिन दुर्घटनाएं होती रहती है जिसको लेकर ग्रामीणों ने नायब तहसीलदार को ज्ञापन देकर ओवरलोड वाहनों के खिलाफ कार्यवाही की मांग की है।

हेम सिंह किशोरपुरा ने बताया कि कभी-कभी तो ओवरलोड वाहन मकानों में एवं खेतों में घुस जाते हैं जिस कारण बड़ी दुर्घटनाएं होने से बच जाती है।

समय रहते अगर इन वाहनों के खिलाफ कार्रवाई नहीं की गई तो इस रोड पर गंभीर घटनाएं घट सकती हैं। ज्ञापन देने वालों में धर्मेंद्र सिंह, अंकित, विक्रम, रवि, भारत आदि शामिल रहे।

- **इन ओवरलोड वाहनों से सड़कों पर रोड़ी, पत्थर गिरते रहते हैं जिससे आमजन भय के साए में जीने को मजबूर है।**

## राशिफल गुरूवार 3 अगस्त, 2023

पंडित अनिल शर्मा

द्वि. सावन मास (अधिक), कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2080, धनिष्ठा नक्षत्र प्रात: 9:56 तक, सौभाग्य योग दिन 10:17 तक, तैतिल करण प्रात: 6:11 तक, चन्द्रमा कुम्भ राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थिति:** सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-सिंह, बुध-सिंह, गुरू-मेष, शुक्र-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज भद्रा रात्रि 2:31 से शुक्रवार दिन 12:45 तक है। आज पंचक है।

**सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया:** शुभ सूर्योदय से 7:35 तक, चर 10:54 से 12:33 तक, लाभ-अमृत 12:33 से 3:52 तक, शुभ 5:31 से सूर्यास्त तक।

**राहूकाल:** 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:56, सूर्यास्त 7:10



**मेष**
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

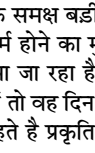

**सिंह**
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

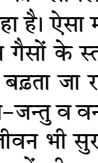

**धनु**
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।



**वृष**
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

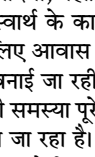

**कन्या**
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। मन का भय समाप्त होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

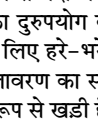

**मकर**
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।



**मिथुन**
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

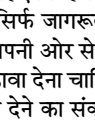

**तुला**
नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

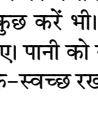

**कुंभ**
व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित सम्पर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।



**कर्क**
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यक्तिगत परेशानियों के कारण भागदौड़ रहेगी। मानसिक तनाव बना रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

**वृश्चिक**
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन योजना का क्रियान्वयन होगा।

**मीन**
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। मन में असंतोष बना रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

# पुलिस ने "धर्म स्तूप" को "धर्मसपुत" और "चूरू" को "चुरु" लिखवाया!

## लोगों ने कहा कि चूरू की पुलिस को छोटी-छोटी बातों की ओर भी ध्यान देना चाहिए

**चूरू,** (कासं)। चूरू रेलवे स्टेशन के सामने मुख्य सड़क पर स्थित धर्म स्तूप पुलिस चौकी के दरवाजे के ऊपर लगा बोर्ड अशुद्धियों से भरा हुआ है। यहां खुद पुलिस अधीक्षक को अवगत करवा देने के बाद भी कोई ध्यान नहीं दिया गया है। इससे राजस्थान पुलिस हास्य का पात्र बनी हुई है। मिली जानकारी के अनुसार यहां 'धर्म स्तूप' को बड़े-बड़े अक्षरों में 'धर्मसपुत' लिखा हुआ है। इसी प्रकार 'चूरू' को 'चुरु' लिखवा रखा है।

- **खुद पुलिस अधीक्षक को अवगत करवा देने के बाद भी कोई ध्यान नहीं दिया गया**
- **गलत शब्द लिखे होने से लोगों के लिए पुलिस हास्य का पात्र बनी हुई है**

यहां इस चौकी में मौजूद प्रहलाद नामक सिपाही ने बताया कि वह तो एक सिपाही है। इस संबंध में एसपी को बता दिया था, लेकिन बोर्ड को सही नहीं करवाया गया है। उन्होंने कहा कि आज एक बार फिर उच्च अधिकारियों को बता देंगे। कुल मिलाकर गलत शब्द लिखे होने से लोगों के लिए पुलिस हास्य का पात्र बनी हुई है। लोगों ने कहा कि भूमाफिया, सटोरियों आदि के खिलाफ तो चूरू की पुलिस कोई कदम नहीं उठाती है, ऐसी छोटी-छोटी बातों की ओर तो ध्यान देना चाहिए। यहां पुलिस ने 'धर्म स्तूप' का नाम बदलकर 'धर्मसपुत' कर दिया है, जिसका कोई अर्थ नहीं है।

**चूरू रेलवे स्टेशन के सामने मुख्य सड़क पर स्थित धर्म स्तूप पुलिस चौकी के दरवाजे के ऊपर लगा बोर्ड अशुद्धियों से भरा हुआ है।**